

من حقوق المصطفى - الحذر من معصيته
فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله
باللغة الهندية
المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अधिकार आपकी अवज्ञा से बचना भी है।

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ)
(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)
(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِغِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअत (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअत (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआला से डरो उसकी आज्ञाकारीता करो उसकी अवज्ञा से दूर रहो जान लो कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अधिकार यह भी है कि आपकी अवज्ञा से बचा जाए अल्लाह के इस कथन में आपकी अवज्ञा से बचने का निर्देश है:

وَمَنْ يَعِصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ (النساء: 14)

अर्थात: " जो व्यक्ति अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अवज्ञा करे और उसके निर्धारित सीमाओं से आगे निकले उसे वह नरक में डाल देगा जिसमें वह सदैव रहेगा इन्हीं लोगों के लिए अपमानजनक यातना है।"

अल्लाह के इस कथन में भी यही निर्देश है:

وَمَنْ يَعِصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا (الأحزاب: 36)

अर्थात: " (याद रखो!) जो भी अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा वह स्पष्ट गुमराही में पड़ेगा।"

अल्लाह ने अधिक फ़रमाया:

(وَيَوْمَ يَعِضُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا [27] يَا وَيْلَتَى لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا [28] لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدُولًا) (الفرقان: 27-29)

अर्थात: " उस दिन ज़ालिम (अत्याचारी) अपने हाथ चबाएगा कहेगा: ए काश! मैंने रसूल के साथ मार्ग अपनाया होता। (२७) हाय मेरा दुर्भाग्य! काश! मैंने अनूक व्यक्ति को मित्र ना बनाया होता। (२८) उसने मुझे भटका कर अनुस्मृति से विमुख कर दिया, इसके पश्चात कि वह मेरे पास आ चुकी थी। शैतान तो समय पर मनुष्य का साथ छोड़ ही देता है।

अल्लाह के इस कथन को भी देखें:

وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ
وَنُصَلِّهِ ۖ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا. (النساء: 115)

अर्थात: " और जो व्यक्ति इसके पश्चात भी कि, मार्गदर्शन खुलकर उसके सामने आ गया है, रसूल के मार्ग के अतिरिक्त किसी और मार्ग पर चलेगा तो उसे हम उसी पर चलने देंगे, जिसको उसने अपनाया होगा, और उसे नरक में झोंक देंगे, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है."

अल्लाह ने अधिक फ़रमाया:

فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ ۖ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ. (النور: 63)

अर्थात: " अतः उनको जो उसके आदेश की अवहेलना करते हैं डरना चाहिए कि कहीं ऐसा ना हो कि उन पर कोई आजमाइश आ पड़े अथवा उन पर कोई दुखद यातना आ जाए।"

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह अल्लाह के इस कथन:

فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ ۖ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ. (النور: 63)

का उल्लेख करते हुए लिखते हैं: "अर्थात: (जो व्यक्ति) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश का अवज्ञा करते हैं, आपके आदेश का मतलब आपका मार्ग है, आपका शैली, आपकी सुन्नत एवं आप की लाई हुई शरीअत (इस्लाम धर्म) है,

समस्त कार्यों एवं कथनों को आपके कार्य एवं कथन के आधार पर ही तौला जाएगा, जो आपकी सुन्नत के अनुसार होगा उसे स्वीकार किया जाएगा और जो उसके विरुद्ध होगा उसे उसके कहने या करने वाले पर लौटा दिया जाएगा। जैसा कि सहीहैन (बुखारी एवं मुस्लिम) आदि में विवरित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

अर्थात: "जिस व्यक्ति ने हमारे धर्म में किसी ऐसी नई चीज़ का अविष्कार किया जो इसमें से नहीं है तो वह अस्वीकार करने योग्य है।"

अर्थात: जो लोग आंतरिक अथवा बाह्य रूप से रसूल की लाई हुई शरिअत (इस्लाम धर्म) का उल्लंघन करते हैं उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि कहीं उन्हें उत्पीड़न ना आ पकड़े, अर्थात: उनके हृदयों में कुफ़्र (नास्तिकता) अथवा मुनाफ़िकत (पाखंडी) अथवा बिदअत (नवोन्मेष) ना जन्म ले ले, अथवा उन्हें दर्दनाक यातना ना आ पकड़े, अर्थात: दुनिया में हत्या एवं लूटपाट, दंड हिरासत आदि रूप के उत्पीड़नों से जूझना ना पड़े।"

मामूली तसरूफ़ (उलटफेर) के साथ उनका कथन समाप्त हुआ।

हदीस में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोध से रोका गया है, जैसा की हदीस में वर्णन है:

अर्थात: " जब मैं तुम्हे किसी चीज़ से रोकू तो तुम उससे रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी बात का आदेश दू तो तुम अपनी शक्ति के अनुसार उसे पूरा करो।"

1{इसे बुखारी:(७२८८), मुस्लिम:(१३३७) ने अबू हरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।}

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा दुनिया व आखिरत में यातना का कारण है, जैसा कि सलमा बिन (पुत्र) अलाकू कि सत्य हदीस है:

अर्थात: " एक व्यक्ति ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बाएं हाथ से खाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दाएं हाथ से खाओ ,वह बोला: मुझसे नहीं हो सकता।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह करे तुझसे ना हो सके! उसने अकड़ से ऐसा किया था, वह उस हाथ को मुंह तक ना उठा सका।"

2{इसे मुस्लिम:(२०२१)ने रिवायत किया है।}

सईद बिन (पुत्र) मुसैय्यिब बिन हज़्न 3{हज़्न) "ज़" के सुकून(स्थिरता) के साथ कठोरता के अर्थ में है, इसका विपरीत (आसान) अर्थात सुविधा है, हदीस में आया है:

अर्थात: " हे अल्लाह! कोई चीज़ आसान नहीं है, मगर जिस को तू आसान कर दे, और तू जब चाहता है कठिन चीज़ को भी आसान कर देता है।"

इसे इब्न-ए-हिब्बान:९७४ ने अपने सही में रिवायत किया है, और अल्लामा अल्बानी ने इसको अल-सिलसिलह अल-सहीहह में २८८६ के अंतर्गत विवरण किया है।} अपने पिता से रिवायत करते हैं कि उनके दादा हज़्न पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? उन्होंने कहा कि मेरा नाम "हज़्न" है, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम आसान हो, उन्होंने कहा कि मैं अपने पिता का रखा हुआ नाम नहीं बदल लूंगा।

सईद बिन (पुत्र) मुसैय्यिब ने कहा कि उसके बाद अब तक हमारे परिवार में कठोरता एवं मुसीबत ही रही।"

4{इसे बुखारी ६१९० ने वर्णन किया है।}

अबू हुमैद अल-साइदी रज़ि अल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हमने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तबूक के युद्ध में भाग लिया, जब हम तबूक के स्थान पर पहुंचे तो आपने फ़रमाया:

अर्थात: " आज रात बहुत तेज़ आंधी चलेगी, इसलिए कोई व्यक्ति खड़ा ना रहे, एवं जिसके पास ऊँट हों वह उसे बांध दे, इसलिए हमने ऊँट बांध लिए, और आंधी बहुत तेज़ आई, एक व्यक्ति खड़ा हो गया था तो हवा ने उसे "तै पहाड" पर जा फेंका।"

{इसे बुखारी:(१४८२), एवं मुस्लिम: (१३९२) ने वर्णन किया है।}

अर्थात: " अब्दुल्लाह बिन (पुत्र) अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने उल्लेख किया है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक आराबी (ग्रामीण) कि बीमार पुर्सी के लिए गए, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब भी किसी रोगी की बीमार पुर्सी के लिए जाते तो फ़रमाते: कोई बात नहीं, इनशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) तो यह बुखार पापों को धो देगा। पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस देहाती से भी यही कहा:

कोई बात नहीं, इनशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) तो यह बुखार पापों को धो देगा। उसने कहा: आप कहते हैं, पापों को धोने वाला है बिल्कुल नहीं यह तो अति तीव्र रूप का बुखार है अथवा (कथावाचक ने) "तसूर" कहा (दोनों का अर्थ एक ही है।) कि बुखार एक अति बूढ़े व्यक्ति पर जोश मार रहा है जो क़ब्र तक पहुंचाए

बिना नहीं छोड़ेगा। पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अच्छा तो फिर ऐसा ही होगा।"

6{इसे बुखारी: (३६१६)ने वर्णन किया है।}

ए मुसलमानो! पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा चार प्रकार के हैं:

(१) सगीरा (छोटा)

(२) कबीरा (बड़ा)

(३) बिदअत (नवाचार)

(४) कुफ़ (नास्तिकता)

◆कबीरा का अर्थ: वह पाप है जिसके करने वाले के प्रति लानत, (अभिशाप) अथवा अल्लाह का क्रोध, अथवा नरक की चेतावनी, एवं दंड का उल्लेख है। कबीरा (बड़े पाप) का अपराधी आखिरत में अल्लाह की मशीय्यत (चाहत) के अंतर्गत होगा।

यदि अल्लाह चाहेगा तो उसे यातना देगा एवं चाहेगा तो छुमा प्रदान करेगा। इस लिए कबाएर (बड़े पापों से बचना अति आवश्यक है।

अल्लाह का कथन है:

إِنْ تَجْتَنَّبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا (النساء: 31)

अर्थात: " यदि तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिन से तुम्हें रोका जा रहा है तो हम तुम्हारे बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें प्रतिष्ठित स्थान में प्रवेश कराएंगे। "

चोरी, शराब पीना, सूदखोरी, बलात्कार, संबंध तोड़ना एवं महिलाओं की बेपर्दगी जैसे कार्य बड़े पापों में शामिल हैं। इन समस्त कार्यों के प्रति सांसारिक अथवा उखरवि दंड का उल्लेख आया है।

◆ सगीरा (छोटे पाप) का मतलब हर वह पाप है जिस के प्रति ना तो सांसारिक दंड का उल्लेख है और ना ही आखिरत में कोई विशेष दंड का उल्लेख आया है। 7{देखें: मजमूअ-तुल-फ़तावा इब्न-ए-तैमिया, ११/६५०६५१, इब्न-ए-तैमिया इस कथन को इब्न-ए-अब्बास, अबू ओबैद अल-कासिम बिन (पुत्र) सलाम एवं इमाम अहमद बिन हंबल आदि की ओर संबंधित किया है, और कहा है कि यह सर्वोत्तम कथन है।} किंतु इस बात को समझना भी अवश्य है कि जब सगीरा (छोटे पापों) को कोई व्यक्ति लगातार करे और उस से तौबा ना करे तो वह कबीरा (बड़ा पाप) में परिवर्तन हो जाता है।

इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से वार्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

अर्थात: "छोटे-छोटे पापों से बचो क्योंकि वह जब मनुष्य के अंदर जमा हो जाते हैं तो उसे नष्ट कर देते हैं। पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन छोटे-छोटे पापों का उदाहरण उस समुदाय से दिया जो किसी रेगिस्तान में डेरा डाले और जब उनके खाना बनाने का समय हो जाए तो (उनमें) से कोई व्यक्ति (लकड़ी की खोज) में निकल पड़े, जब लकड़ी ले आए और दूसरा व्यक्ति भी लकड़ी लेकर आए यहां तक कि बहुत सी लकड़ियां जमा हो जाएं उसके पश्चात वह उन लकड़ियों को जलाकर आग जलाए और उससे भोजन तैयार कर ले।" 8{इसे

इमाम अहमद (०१/४०२-४०३) ने विवरण किया है और "अल-मुसनद" के शोधकर्ताओं ने ने हसन लेगैरिही का स्थान दिया है।}

इब्ने मसऊद का कथन समाप्त हुआ।

यही कारण है कि इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहूयु अन्हूमा ने सत्य रिवायत (कथन) में फ़रमाया: लगातार किया जाने वाला कोई भी पाप सगीरा (छोटा) नहीं रहता, और तौबा के साथ किया जाने वाला कोई भी पाप कबीरा (बड़ा) नहीं रहता। इसे इब्ने अब्बास ने विवरण किया है।

◆ रही बात कुफ़्र (नास्तिकता) की तो यह नवाकिज़-ए-इस्लाम (इस्लाम विरोधी) कोई भी कार्य करने से हो जाता है, जैसे अल्लाह के अतिरिक्त की पूजा करना। उदाहरण स्वरूप अंबिया व सालेहीन की अथवा उनके क़ब्रों की पूजा करना, अथवा अल्लाह व रसूल, अथवा अल्लाह के धर्म को अपशब्द कहना, अथवा शरीअत इस्लाम धर्म के किसी भाग का मज़ाक़ बनाना, अथवा धर्म के किसी प्रसिद्ध चीज़ का खंडन करना, उदाहरण स्वरूप अल्लाह पर ईमान लाने का खंडन करना, अथवा शराब की निषेधता का खंडन करना, अथवा यह विश्वास रखना की पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त किसी और का विधि आपके शैली से उत्तम है, अथवा जादू करना, कफ़िरों के धर्म में रुचि दिखाते हुए मोमिनों (विश्वासियों) के विरुद्ध उनकी सहायता करना।

कुफ़्र (नास्तिकता) में पड़ जाने के अनेक कारण हैं जिन्हें फ़ोक़्हा (विधिवेत्ताओं) ने फ़िक़्ह की पुस्तकों में बाबुल-मुरतद (अध्याय स्वधर्मत्यागी) के अंतर्गत उल्लेख किया है हमने केवल कुछ उदाहरणों का उल्लेख किया है।

♦ जहां तक बिदअत (नवाचार) की बात है तो इबतेदा (जिससे बिदअत शब्द व्युत्पन्न है) का शब्दकोश परिभाषा अविष्कार करने एवं जन्म देने के हैं एवं इसकी शरई (धार्मिक) परिभाषा यह है कि धर्म में कोई ऐसी पूजा अथवा आस्था का आविष्कार करना जिसका धर्म में कोई प्रमाण ना हो। बिदअत (नवोन्मेष) का संबंध आस्था से भी है एवं कार्य अर्थात पूजा से भी है।

पूजा में नवाचार का उदाहरण: नमाज़ों के पश्चात सामूहिक रूप से तस्बीह के वाक्यों का पाठन करना, जुमा की नमाज़ के पश्चात जोहर की नमाज़ पढ़ना, ईद मिलादुन्नबी मनाना, इसरा व मेराज का उत्सव मनाना, एवं इसी प्रकार के अन्य कार्यों को करना जिन्हें कुछ लोग अल्लाह के निकटता प्राप्त करने के भरम में करते हैं जबकि इस प्रकार की पूजा अल्लाह से दूर कर देती हैं क्योंकि अल्लाह ने उन्हें प्रमाणित नहीं किया है बल्कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार के कार्य को बिदअत (नवाचार) का नाम दिया है जैसा कि हदीस में आया है:

अर्थात: "प्रत्येक बिदअत (नवाचार) गुमराही है।"

9{इसे मुस्लिम:(८६७)नए जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु से और अहमद: ०४/१२६-१२७ आदि ने इरबाज़ बिन सारिया रज़ि अल्लाहु अन्हु से वर्णन किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सत्य कहा है।}

अल्लाह तआला पवित्र कुरआन को मेरे और आपके लिए बा-बरकत (सौभाग्यशाली) बनाए, मुझे और आपको उसकी आयतों एवं हिकमत (प्रतिज्ञा) पर आधारित परामर्शों से लाभ पहुंचाए। मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप सबके लिए अल्लाह से क्षमा की दुआ करता हूं, आप भी उसे क्षमा प्राप्त

करें , निः संदेह वह अति तौबा स्वीकार करने वाला है और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى أما بعد !

जान लें कि अल्लाह तआला ने आपको एक बड़ी चीज़ का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا.
(الأحزاب: 56)

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस पैगंबर पर रहमत (कृपा) भेजते हैं ए विश्वासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:

अर्थात: " तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सूर (तुरही) फूँका जाएगा 11 {अर्थात तुरही दूसरी बार फूँका जाएगा माने वह तुरही है जिसमें इसरफ़ील फूँक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूँक लगाने का आदेश दिया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े हो जाएंगे।} उसी दिन चीख़ होगी। 12 { अर्थात: जिससे सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश होकर गिर पड़ेंगे और समस्त जीव की मृत्यु हो जाएगी। यह मदहोशी उस समय

उत्पन्न होगी जब सुर (तुरही) में सर्वप्रथम फूंक लगाया जाएगा ०२ फूंक के मध्य में ४० वर्षों का अंतर होगा।}

इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके खुलफ़ा (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारियों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे, तू अपने मुवहिहद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर। हे अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना दे।

हे अल्लाह ! जो हमारे प्रति, इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ही ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे!

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले , सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रूप

से हमारे देशों से ऐ दोनों जहां के पालनहार! हे अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रहमत (दया) का कारण बना दे!

हे हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में समस्त प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

लेखक: माजिद बिन सुलेमान अलरसी

२० रबी-उल-अव्वल ,सन् १४४२ हिजरी

जूबैल,सऊदी अरब।

अनुवाद: फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com